डॉ. आमटे दंपती ने आईआईएम में बताया कैसे हुई अस्पताल की ब्रांडिंग

जीवन का हर पन्ना खोलकर रख दिए रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित डॉ. आमटे दंपती ने

झाड़ के नीचे खोली क्लीनिक, कांधे में आए मरीजों को स्वस्थ होकर लौटते देखा तो बढ़ा लोगों का विश्वास

नवभारत ब्यूरो । रायपुर।

आईआईएम रायपुर के ज्ञान वर्षा कार्यक्रम में शनिवार को समाजसेवी और रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित डॉ. प्रकाश आमटे और डॉ. मंदाकिनी आमटे शामिल हुए। यहां डॉ. दंपती ने जीवन का हर पन्ना खोलकर रख दिया। डॉ. प्रकाश और डॉ. मंदाकिनी आमटे ने बताया कि जब उन्होंने 1973 में हेमलकसा में अस्पताल खोला तो मरीज नहीं आते थे। परिजनों को समझाकर बड़ी मुश्किल से जिन गंभीर मरीजों को खटिया में कंधे पर उठाकर लाते थे, जब वो अपनी खटिया कंधे पर उठाकर ले जाते और लोग उसे देखते तो उनका विश्वास बढ़ता। यहीं उनके अस्पताल की ब्रांडिंग हुई। महाराष्ट्र से दूर छत्तीसगढ़ के बस्तर तक पहुंचा। नारायणपुर से नदी पार करके मरीज आते और स्वस्थ होकर जाते। डॉ. प्रकाश आमने ने सिलसिलेवार पूरे 50 के सेवा जीवन को आईआईएम के स्टूडेंट के सामने रखा। उन्होंने बताया कि हेमलकसा में लोक बिरादरी प्रकल्प आश्रम शुरू करना आसान नहीं था। 1973 दिसम्बर में संस्था के नाम से हेमलकसा में टिन सेड बनाया। 6 माह का राशन वहां स्टोर किए। खुद के लिए छोटा सा हट बनाए थे, जिसमें दरवाजा तक नहीं था। लालटेन से रात का गुजारा करते थे। लेकिन यह शुरुआत थी। असली परेशानी भाषा की थी। वहां के माड़िया आदिवासी उन्हें देखकर भाग जाते थे।

उनके बीच जाने भाषा का प्राब्लम दूर करना था। इस काम में फारेस्ट विभाग के कर्मी सहायक हुए। झाड़ के नीचे क्लीनिक खोला था। फारेस्ट कर्मियों से पूछकर बीमारियों, शरीर के अंग की डिक्शनरी तैयार की। उपकरण नहीं थे डायग्नोसिस करने में काफी दिक्कते होती थी। **जागरूकता लाने स्कूल खोली** – डॉ. आमटे दंपती बताते हैं कि गार्ड आदिवासियों को काम पर बुलाते हैं और रुपए दिए बिना अंगूठा लगवाकर वापस भेज देते थे। शिकायत पर कार्रवाई हुई तो आदिवासियों को काम के पैसे मिलने लगे। फिर जागरूकता लाने के लिए उन्होंने 1976 में स्कूल खोले। लेकिन यहां भी अस्पताल की तरह ही विश्वास की समस्या थी। पालकों में डर था कि उनके बच्चे को सांप ने काट लिया या शेर ने हमला कर दिया तो क्या होगा। बच्चों को वापस नहीं करने का डर भी था। पहले साल 25 बच्चे आए जिनमें से 10-12 भाग गए। बचे 15 बच्चों को शिक्षा के साथ खेती सिखाई तो पंद्रह बच्चे दूसरे साल और 15 लेकर आए।

इसलिए खोला जानवरों का अनाथालय

डॉ. आमटे बताते हैं कि एक बंदर का हाथ पैर बांधकर कुछ लोग जा रहे थे। जब उन्हें कहा कि उन्हें छोड़ दें सवाल था कि बच्चे क्या खाएंगे? जब उन्हें बदले में चावल दिए तो बंदर के बच्चों को छोड़ा। इसके बाद डीएफओ लेपर्ड छोड़ गया। फिर बिछड़े हुए जंगली जानवर आने लगे।

15 मिनट में हो गई शादी, दूसरे दिन जंगल पहुंचे

डॉ. आमटे बताते हैं कि ने पंडित था, न ही मुहूर्त देखे 15 मिनट में उनकी शादी हो गई थी। उस साल भारी अकाल पड़ा था, ऐसे में मिठाई का तो सवाल ही नहीं था। इससे भी बड़ी बात यह थी कि शादी के दूसरे दिन ताडोबा नेशनल पार्क पहुंच गए। फारेस्ट ऑफिसर ने पूछा कि कल आपकी शादी हुई और आप जंगल में कहा जा रहे हैं? इस पर डॉ. प्रकाश का जवाब था कि दिखाना है कि आगे जाकर कहा काम करना है।

Navbharat,My City,03 March 2024, P.05